श्री गुरु महिमा स्तवन

(श्री शंकर अवतार)

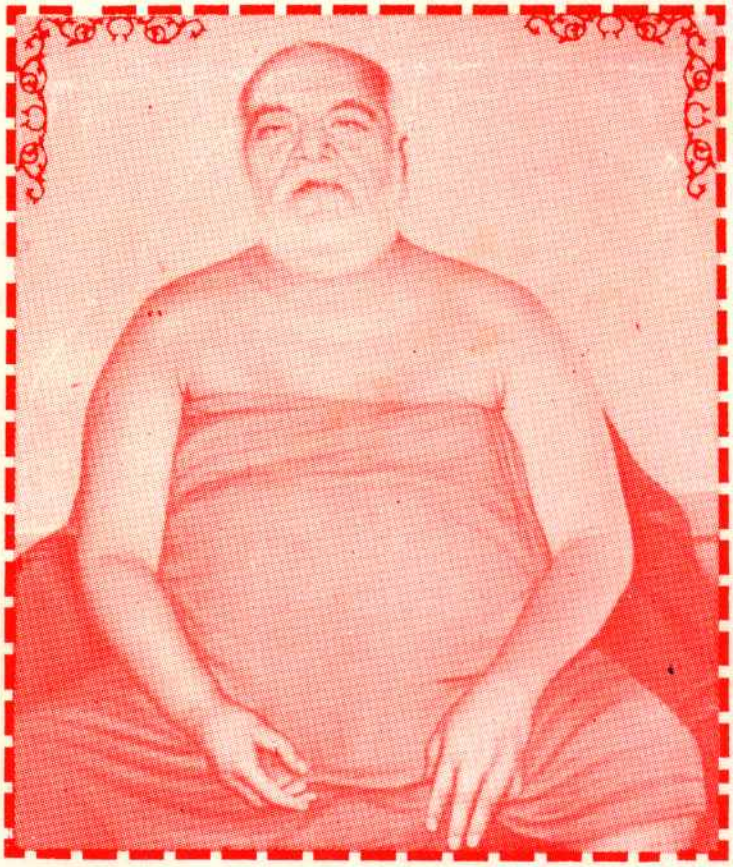

:: रचयिता ::

रतन सिंह परमार्य, दतिया

:: प्रकाशक ::

रतनसिंह परमार्य

चरण सेवक (श्री पीताम्बरापीठ, दतिया)

तृतीयवार 2005 मूल्य–25/–

रतनसिंह परमार्य (रत्न)
दतिया (म.प्र.)

श्री गुरु महिमा स्तवन

(श्री शंकर अवतार)

:: रचियता ::

रतन सिंह परमार्य, दतिया

:: प्रकाशक ::

रतनसिंह परमार्य

चरण सेवक :– (श्री पीताम्बरापीठ, दतिया)

तृतीयबार 2005 मूल्य–25/–

:: प्रकाशक ::
रतन सिंह परमार्य (रत्न)
दतिया (म.प्र.)

::मुद्रक ::
व्यवस्थापक
शिवशक्ती प्रेस प्रा.लि.
नयागाँव, ग्वालियर रोड, झाँसी
फोन – 0517–2441092

संवत् तिथी :
शारदीय नवरात्रि, दि. 9 अप्रैल 2005
संवत् 2062

- प्रकाशीय -

श्री रतनसिंह परमार पूज्यपाद स्वामी जी महाराज के इने गिने पुराने शिष्यों में से है। इनकी श्रद्धा और भक्ति उच्च कोटि की है। गुरुजी के प्रति श्रद्धांजलि में इन्होंने यह कविताऐं लिखी है। भक्तों की श्रद्धा और आस्था इनके पढ़ने से दृढ़तर होगी इसलिए पीठ की ओर से यह प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पाठकगण काव्य रचना के गुण दोष या त्रुटियों पर ध्यान न देकर भक्त के भाव का रसास्वादन करेंगे।

स्व. पं. सूर्यदेव शर्मा
मंत्री, पीताम्बरा पीठ, दतिया (म.प्र.)

- साधुवाद -

॥ श्री ॥

श्री रतन सिंह जी परमार एक अच्छे साधक हैं। भगवत कृपा से आपको कवि हृदय भी प्राप्त है मां सरस्वती ने आपकी वाणी को गेय रूप देकर एक मधुर झंकृति भी प्रदान की है। यह मणी कांचन संयोग ही है। कि एक साधनारत व्यक्ति कवित्व शक्ति से भी उपेय है। इनकी यह कवित्व शक्ति सन्मार्गोन्मुखी है,

अतः जीवन की निःसारता का निवारण करते हुए श्री रतन सिंह जी की वाणी प्रभु एवं गुरू समर्पण के लिए प्रस्फुरित होती है। हम सुवृत्ति के लिए श्री रतन जी को अनेकधः साधुवाद एवं शुभकामनाएं।

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त,
"प्राध्यापक"
शा.के.आर.जी. कालेज
ग्वालियर (म.प्र.)

गुरू महिमा-स्तवन

(एक दृष्टि)

श्रीयुत रतन सिंह जी परमार ने इस दुस्तर संसार से सहज पार कराने के सहज माध्यम परमेश्वर रूप गुरू स्वामी जी महाराज की महिमा का स्तवन कर अपने आत्मतत्व को धन्य किया है इनका यह प्रयास स्तुत्य तो है ही, जन–जन के कल्याणार्थ भी अमृत–चिन्तन है।

श्री परमार जी ने गुरू स्तवन क़े रूप में यह अपना तृतीय पुष्प प्रस्तुत किया है। प्रथम दो पुष्प गुरू की महिमा के स्तवन के रूप में शिष्यों के कल्याण के सुलभ सोपान सिद्ध हुए है यह तृतीय पुष्प भी जन–जन के कल्याण एवं त्राण में पूर्णतः सहायक होगा ऐसा विश्वास है।

परमार जी की इस रचना का तत्व इस प्रकार है :–

ध्याइये गुरू को बारम्बार।
करेंगे वे ही प्राणि उद्धार।।
सद्गुरू ही सद् पंथ दिखाते,
सदाचरण सद्वृत्ति सिखाते।
मन को सुस्थिर करते जाते,
शुभकर्मों में सदा लगाते।
देते अतुलित प्यार।
ध्याइये गुरू को बारम्बार।।
बड़े जतन से रतन सुस्तवन,
सद्गुरू के प्रति कियो शत नमन।
कट जाएंगे हमसे बन्धन,
प्रेरक उत्प्रेरक यह चिन्तन।
रहे न जीवन भार।
ध्याइए गुरू को बारम्बार।।

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त,
"प्राध्यापक"
शा.के.आर.जी. कालेज
ग्वालियर (म.प्र.)

पूज्य महाराज जी का पत्र

श्री:

दतिया
१५-११-५२

श्रीयुत कुँवर रतनसिंहजी

शुभाशीर्वाद—

प्रसाद, भेंट और अद्धाभयपत्र प्राप्त हुआ प्रसन्नता हुई विशेषव्या लिखें आपकी इसभावनाको दृढ़ करते रहो यही उन्नेका मार्ग है— अभ्यास नियम, अथवा नियमपूर्वक करते रहना श्री माताका स्मरण ऐसे कार्य करते रहना यही सही बाधा शांति का

अपने लोगोंको स्मरण करती है उँ शम्

श्रीपीतांबरपीठ
दतिया

स्वामी

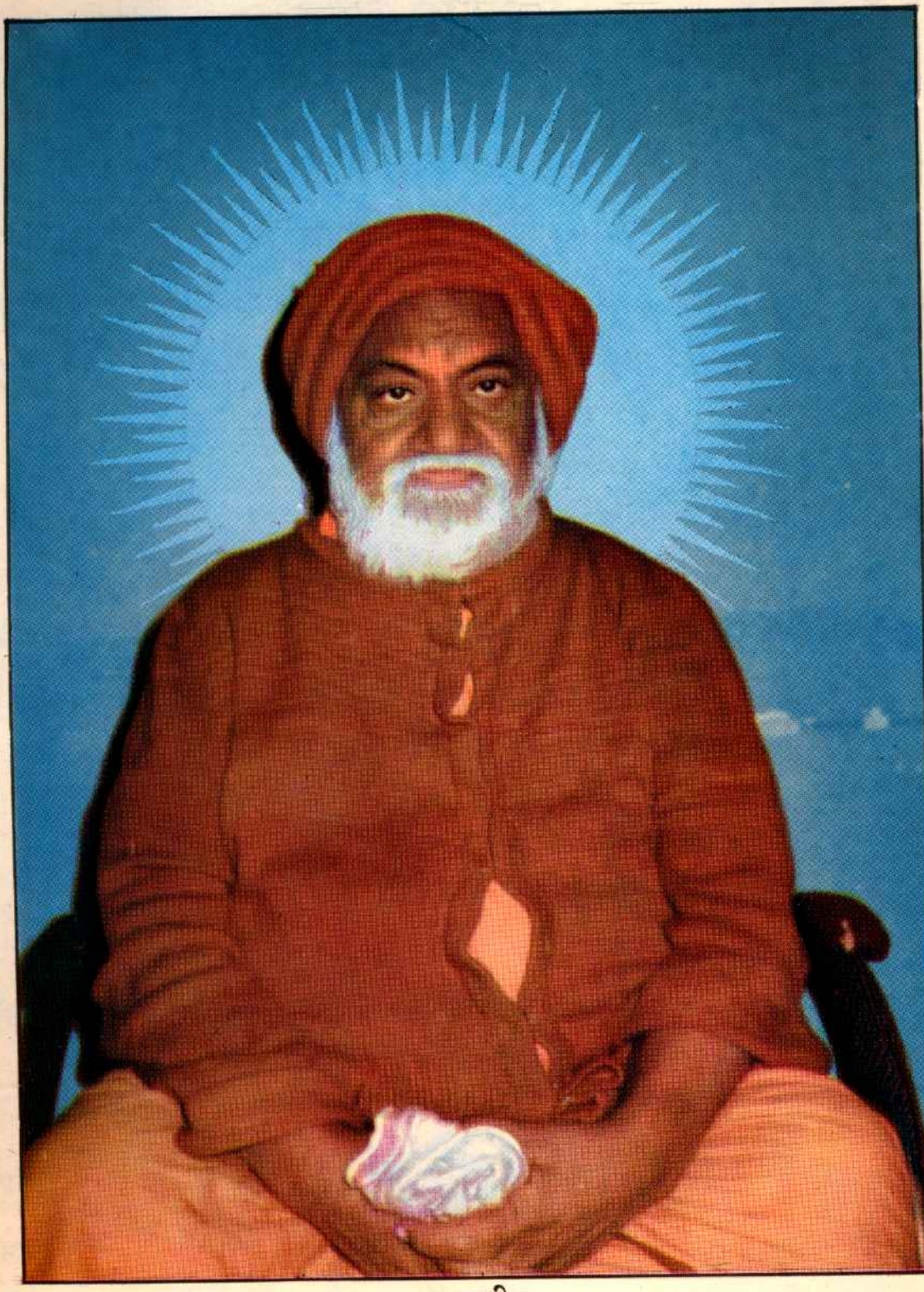

ब्रह्मलीन

श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

नाम

पिता का

जन्म ति

शिक्षा

व्यवसाय

प्रकाशि

विशेष

पता

हाल

स्थाई

फोन

मोबाइ

कवि परिचय

नाम	:–	रतन सिंह परमार्य (''रत्न'')
पिता का नाम	:–	श्री स्व. प्रीतम सिंह जी परमार्य
जन्म तिथि	:–	2 जुलाई सन 1927 ई.।
शिक्षा	:–	1– हाई स्कूल द्वितीय श्रेणी उत्तीर्ण (इलाहाबाद बोर्ड) 2. संस्कृत प्रारम्भ परीक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण वेद विद्यालय श्री पीताम्बरा पीठ दतिया, (बम्बई बोर्ड)
व्यवसाय	:–	सेवा निवृत्त कृ.वि. अधिकारी (म.प्र.)
प्रकाशित कृतियाँ	:–	श्री गुरू महिमा स्तवन (श्री शंकर अवतार) परमपूज्य 1008 श्री स्वामी जी महाराज राष्ट्र गुरू दतिया के प्रति :– 1– प्रथमवार प्रकाशन वर्ष 1994–1000 2– द्वितीय प्रकाशन सम्वत् 2000–1000 3– तृतीय प्रकाशन 2005 में होने जा रहा है।
विशेष	:–	पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में समय–समय पर प्रकाशन बुन्देली एवं खड़ी बोली में प्रकाशित होता रहता है।
पता	:–	मूल निवास ग्राम कैरूआ, जिला ग्वालियर
हाल	:–	जिला दतिया
स्थाई पता	:–	मुड़ियन का कुआँ, दतिया (मध्य प्रदेश)
फोन नं.	:–	(07522)–235886
मोबाइल नं.	:–	9826824677

हस्ताक्षरः– आर.एस. परमार्य

आभार

(1) प्रस्तुत गुरू महिमा स्तवन में सर्वप्रथम सत्प्रेरणा स्त्रोत पूज्य गुरुदेव श्री 1008 ब्रह्मलीन श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु अनन्त विभूषित श्री स्वामी जी महाराज दतिया के श्री चरणों में सादर कोटिशः नमन करता हूँ। जिनकी कृपा दृष्टि से मुझ जैसे अल्प बुद्धि, अकिंचन को सत्प्रेरणा देकर गुरु महिमा स्तवन लिखवाई और आज यह पूज्यपाद के आशीर्वाद के रुप में आपके सामने है।

(2) डा. श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त प्राध्यापक संस्कृत विभाग शासकीय के. आर.जी. कॉलेज ग्वालियर (म.प्र.) के प्रति मैं विशेष रुप से आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मार्गदर्शन दिया एवम् पुस्तक को प्रकाशित करने योग्य बनाया श्री गुप्त के सक्रिय प्रयास के कारण ही यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया जा सका।

(3) पीठ के आचार्य पं. ओमनारायण जी शास्त्री द्वारा मुझे समय–समय पर भावनात्मक प्रोत्साहन देकर उत्साहित किया गया जिसके लिये मैं शास्त्री जी का हृदय से आभारी हूँ।

(4) परम प्रियगुरु–भ्राता श्री मुकेश भाई कोठारी नागपुर के वांछित सहयोग के लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

(5) पीठ के सेवक प्रिय कमल किशोर खड्ड्र के भावनात्मक सहयोग के लिये मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

(6) इसी तारतम्य में मैं उन सभी गुरुभक्त पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने पुस्तक को सराहा और मुझे तृतीय संस्करण प्रकाशित करवाने हेतु प्रोत्साहित किया।

(7) अन्त में मेरे चि. प्रिय रवीन्द्र सिंह के द्वारा स्तवन को पूर्ण कराने में जो सक्रिय सहयोग है। उस हेतु स्नेह शुभ आशिश।

रतनसिंह परमार्य (रत्न)
दतिया (म.प्र.)

-प्राक्कथन-

परब्रह्म गुरु जानिये, गुरु जीवन, आधार,
आत्मज्ञान बोधक गुरु, गुरु करते भव पार ।।1।।

ज्ञान और विज्ञान गुरु, गुरु सुज्ञान महान्
निर्विकार गुरु सेव्य हैं, करें प्राणि कल्याण ।।2।।

अविकारी गुरु कीजिये, जहां न लोभ न क्रोध,
क्षय होते कामादि सब, देता गुरु प्रबोध ।।3।।

भय ममता आसक्ति पद , माया त्रिगुण विकार,
गुरु कृपा से प्राणि के, हो जाते हैं क्षार ।।4।।

तन जीवन सुखमय रहे, निर्मलता मन पाय,
आत्मबोध में गति रहे, गुरु कृपा हो जाय ।।5।।

माया का नर्तन अतन, जन–मन रीझे जाय,
गुरु महिमा से नारि वह, पुनिः न प्रभाव दिखाय ।।6।।

परब्रह्म दर्शन महत, गुरु कृपा से पाय,
संत कबीरा के वचन, शाश्वत सत्य कहाय ।।7।।

गुरु को कीजे जानकर ज्ञान पुंज अविकार,
निर्विकार निर्मल करें, ज्यों गंगानद वारि ।।8।।

स्वामी जी गुरु जगत् के, परम विवेकी संत,
जिनकी पाय कृपा यतन, असत् बने कुलवन्त ।।9।।

मन वाणी से कर्म से, एक भाव एक पंथ,
भक्ति ज्ञान वैराग्य का, अनुपमेय सद् ग्रन्थ ।।10।।

जिनकी कृपा कटाक्ष से, सद् विचार सद् ग्रन्थ,
जन–जन के कल्याण हित दिखा रहे शिव पंथ।।11।।

जो शिव के अवतार प्रभु, शान्तिशील गुण धाम,
जिनकी चरणों कीसुरज, मन करती निष्काम ।।12।।

मात्र सुस्मरण से सदा, मन पाता विश्राम,
परम शन्ति पाता मनुज, करके दर्श ललाम ।।13।।

तन्त्र, यन्त्र निज मन्त्र सब, नमस्कार के योग्य,
सत्य,दान, तप, क्षमा ही शुभ जीवन के योग्य ।।14।।

शील सदा सत्कर्म रत, विनत, माई में ध्यान,
स्वामी जी के शिष्य की, यही सही पहचान ।। 15 ।।

श्री स्वामी जी गुरु प्रवर, उनके पद धर ध्यान,
श्री रतन जी ने रचा, यह श्रद्धेय विधान ।। 16 ।।

धन्य–धन्य श्री रतन जी, किया जो गुरु का ध्यान,
मन पाये विश्रान्ति चिर, होगा युग कल्याण ।। 17 ।।

स्वामी जी शिवरूप हैं, आदि अनादि अनन्त,
ध्यान करे जो सुमन से, पावे अति आनन्द ।। 18 ।।

जग में गुरु कृपा यतन, ज्ञान जतन सों देत,
वे जन पाते मुक्ति धन, जो गुरु–गुण गहलेत ।। 19 ।।

प्राणि लोक में श्रेष्ठ धन, ज्ञान रतन गुरु ज्ञान,
परम शान्ति दायक सुखद, करें परम् कल्याण ।। 20 ।।

लोक हिताय कियो रतन, गुरु गौरव को गान,
गुरु–भावों से ज्ञान ले ले, करिये अपना त्राण ।। 21 ।।

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त
आचार्य (संस्कृत विभाग)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)

- साधुवाद -

राष्ट्र–गुरु श्री अनंत श्री स्वामी जी महाराज की साधना–स्थली श्री पीताम्बरा पीठ के युग–युगान्तर तक दतियावासियों का अमित उपकार करते हुये दतिया नगरी को विश्व के मानचित्र में गौरव का स्थान दिलाया है।

इसी स्थान के एक सेवक श्री रतनसिंह परमार ने दीर्घ–काल तक राष्ट्रगुरु की चरण–वन्दना करते हुए उनके विषय में जितनी जानकारी प्राप्त की उतनी ही अमित श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ 'स्तवन' प्रस्तुत किया है।

भक्त–हृदय के इन उद्‌गारों का महत्व उनकी भावनाओं में है। सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ माँ पीताम्बरा और राष्ट्रगुरु श्री स्वामी जी महाराज के स्मरण से पाठकों का कल्याण होगा।

रचियता को साधुवाद!

हरिमोहनलाल श्रीवास्तव
साहित्य महोपाध्याय

दतिया (म.प्र.)
दिनांक . 16.9.93

गुरु भक्ति

गुरु–सुभक्ति है रतन–धन,
गुरु ईश्वर साकार।
लोक–हेतु गुरु–भक्ति कौ,
रतन कियो सुविचार ।।1।।
सन्मारग तो मुक्ति है,
गुरु दिखावन हार ।।
गुरु समर्थ की शरण गह,
प्राणि करें भव–पार ।।2।।
सरस्वती – पीताम्बरा
रतन – रूप आगार.।
कृपा सुदानी की मिले,
जब गुरु दें झन्कार ।।3।।
गुरु की पावन–कृपा को,
शरणागत को भाव ।
विनय सरल जिन दल–सुमन,
हो सुचि सत्य स्वभाव ।।4।।
सुकृत सरोवर में सहज
गुरु – सुमक्ति को जाप ।
रतन–जतन कीन्हो 'रतन'
श्लाघिनीय हैं आप ।।5।।

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त
आचार्य एवं अध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
शा. के.आर.जी. कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)

श्री सरस्वती-वन्दना

वीणा वादिनी पुस्तक धारिणी,
श्री हंस वाहिनी माँ! सरस्वती।
आकर मेरे कण्ठ विराजो माँ!,
मेरी वाणी में हो सुरलहरी ।।1।।

वीणा वादिनी .....

शब्दों का भण्डार भरा दो,
छन्द – मात्रा सही करा दो!
"रतन" विनय माँ सरस्वती से,
राष्ट्र–गुरु पर काव्य लिखा दो ।।2।।

वीणा वादिनी .....

चरण सेवक
रतन सिंह परमार्य
दतिया (म.प्र.)

स्वामी सद्गुरु

श्री स्वामी सद्गुरु प्रवर,
गुण – गौरव की खान।
सन्यासी के भेष में,
आये शंभु सुजान।।1।।

अर्द्ध चन्द्र माथे लसे,
ग्रीवा रुद्राक्ष – माल।
वायें कर कमण्डल लिये,
दायें – दण्ड विशाल।।2।।

जिह्वाग्रे हैं सरस्वती,
श्री पलोटें पाँव।
श्री मुख चारों वेद युत,
भक्त सद्गुरू की छाँव।।3।।

सरस्वती-वन्दना

हे! माँ शारदे, हंसवाहिनी वरदे,!
मेरी अल्पबुद्धि को माता,
कृपा–कोर कर प्रखर कर दे,
हे! माँ शारदे, हंसवाहिनी।।1।।
हे माँ मैं, नैनों से पीड़ित,
पर हूँ गुरु भक्ति से प्रेरित।
अपनी कृपा–कोर से माता!
मेरी दृष्टि सुधर कर दे।।2।।
मेरी अल्प कलम से माता!
गुरु–भक्ति के गीत लिखा दें।
भक्ति–भाव मय पूर्ण करा दें,
गुरु–भक्ति भण्डार भरा दें।।3।।
मेरी रिक्त पड़ी है झोली
हे माँ! आकर इसको भर दे।
गुरु–महिमा स्तवन को माता!
गुरु–भक्ति मय पूर्ण कर दे।।4।।
रस–अलंकार भरे हों इसमें,
भाव–विभोर सभी हो जायें।
"रतन" प्रेम के बीज धरा पर,
गीत हमारे ये बो जायें।।5।।

श्री गुरु महिमाः स्तवन

(श्री शंकर–अवतार)

गुरुर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः,
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

शाक्त धर्म की रक्षा करने, सत्य धर्म का भाव जगाने,
शिव शंकर धरनी पर आये, मार्ग मुक्ति का हमें दिखाने ।।1।।
कब–कहां? देव का जन्म हुआ, नहिं जान सके जग के वासी
नहिं नाम प्रभु का जान सके, नहिं जान सके कहां के वासी ।।2।।
शिव शंकर अवतरित धरा पर, धर्म–रुप रक्षक बन आये,
जननी हिय में प्रसन्न हो, श्री शंकर को गोद बिठाये ।।3।।
जनम हुआ जब अभिनव शिशु का, प्रमुदित हुये ग्रामवासी,
जननी मन मुग्ध हुई बहु, माँ अंक बिठाये मृदुभाषी ।।4।।
मस्तक पर चिन्हित अर्धचन्द्र, ग्रीवा के चहुंदिश हैं माला,
मुख मण्डल की आदित्य झलक, नयनाभिराम शोभा आला ।।5।।
प्रतिदिन बालक चन्द्रकला सम, षोड़श कला सा विकास हुआ,
नित जन आकर दर्शन करते, दिव्य ज्योति का प्रकाश हुआ ।।6।।
अल्प आयु में ही शंकर ने, मात–पिता गृह त्याग दिया,
काशी–विद्यापीठ मन्दिर में, वेदों का अभ्यास किया ।।7।।
शीघ्र ही मेधावी शंकर ने, सभी तरह का ज्ञान लिया
जीवन के हर पहलू को, श्री चरणों ने पहचान लिया ।।8।।
विद्याध्ययन कर श्री शंकर, परिभ्रमण हेतु तब चले गये,
उन्नीस ईसवी सोलह से, ग्यारह वर्ष तक भ्रमण किये, ।।9।।
भ्रमणकाल गंगा के तट पर, इक बैरागी प्रभु संग हुए,
दोनों ने संकल्प किया अरु, निर्जन वन में जा ध्यान किये ।।10।।
बिन मांगे ही भिक्षा लेंगे, ऐसा प्रण किया ज्ञानियों ने,

गंगा तट पर दो दिन बीते, अरु ध्यान लगाया मुनियों ने ।।11।।
तीजे दिन सूर्योदय पर ही, साथी योगी ढ़ाढस छोड़ा,
पूर्व किया प्रण त्याग दिया अरु, गंगा के तट से मुख मोड़ा ।।12।।
जग–जननी का मैं अराधक, फिर औरों से क्यों मांगूंगा?
माता स्वयं ही भिक्षा देगी, तब प्रण अपना मैं छोडूंगा ।।13।।
सन्यासी के प्रण से प्रसन्न हो, अर्द्धरात्रि गंगा माँ आई,
रजत–पात्र में खीर खिलाकर, सन्यासी को तृप्ति कराई ।।14।।
गंगा तट से प्रभुवर स्वामी, फिर देशाटन को चले गए,
चलते–चलते पंजाब प्रान्त के, इक सन्यासाश्रम में जा पहुंचे ।।15।।
सन्याश्रम में वयोवृद्ध इक, तांन्त्रिक स्वामी से भेंट किये,
स्वामी जी थे योग्य तपस्वी, उन्हीं से साबर–मन्त्र लिये ।।16।।
लख तिल्ली का मंत्र चमत्कृत, तंत्र–विद्या–स्वामी–मन भाई,
शक्ति साधना में स्वामी ने, तंत्र–साधना ही अपनाई ।।17।।
नौ जुलाई उन्नीस सौ उन्तीस, श्री स्वामी जी दतिया आये,
माँ पीताम्बरा की प्रेरणा से, प्रभुवर मन में हर्षाये ।।18।।
युवा तपस्वी दतिया पधारे, शुभ समाचार यह फैल गया,
स्वामी के शुभ दर्शन करके, भ्रान्त–जनों का मैल गया ।।19।।
युवा तपस्वी की प्रदीप्ति लख, बहु हर्षित थे दतिया वासी,
शिव–शंकर स्वामी को पाकर, वनखण्डी मानो हुई काशी ।।20।।
प्रथम शुभागमन स्वामी जी का, मड़िया–शिव मन्दिर में हुआ,
जहां विद्य मण्डल–दतिया से, समय–समय सत्संग हुआ ।।21।।
कुछ दिन मड़िया शिव मन्दिर में श्री स्वामीजी का वास हुआ,
चन्द्र दिनों में ही स्वामी का वनखण्डेश्वर आवास हुआ ।।22।।
सिद्ध पीठ है यह वनखण्डी, स्वामी ने यह जान लिया,
यही करेंगे शक्ति–साधना, स्वामी जी ने व्रत ठान लिया ।।23।।
वनखण्डी के शिवमन्दिर में, योग्य तपस्वी योगी आये,

दतिया–वासी भक्तजनों ने, अपने सोये भाग्य जगाये ।।24।।
वनखण्डी थी निर्जन वन में, गुंदयाऊ बनी मिटटी कुटिया,
शक्ति साधना के बल प्रभु ने, अमृत की भर दी लुटिया ।।25।।
प्रथम स्वामी ने मन्दिर पर, अखण्ड कीर्तन करवाया,
जो दतिया के सभी जनों को, मन को भी अतिशय भाया ।।26।।
तेज बहुत था मुख–मण्डल पर, फहरी जिससे धर्म–पताका,
स्वामीजी ने ज्ञान–ज्योति से, वनखण्डी का बदला खाका ।।27।।
युवा तपस्वी स्वामी से, पीठ के सिद्ध प्रसन्न हुये,
लेकिन भूत–पिशाच यहाँ के, स्वामी जी से खिन्न हुये ।।28।।
वनखण्डी प्राचीन शिवालय, महाभारत–कालीन दुर्गा माई,
द्रोण–पुत्र अश्वत्थामा ने, शिव–लिंग प्रतिष्ठा करवाई ।।29।।
वनखण्डेश्वर–सिद्धपीठ पर, श्री स्वामी तपस्यालीन रहे,
दतिया में तांत्रिक–साधक थे, तांत्रिक साधना तल्लीन रहे ।।30।।
हिमकर ओझा–घटिका शतक, यहाँ दतिया में प्रसद्धि रहे,
ऋषियों की पीठ तपोभूमि है, यहाँ अनेकों संत हुये ।।31।।
सन्यासी भेष में शिव शंकर, वनखण्डेश्वर मन्दिर आए,
शाक्त–धर्म ज्ञान के द्वारा, प्रभु राष्ट्र–गुरु का पद पाए ।।32।।
माँ! पीताम्बरा की कृपा से, श्री राष्ट्र–गुरु सर्वज्ञ हुए,
सब धर्मों का सार ग्रहण कर, श्री स्वामीजी धर्मज्ञ हुए. ।।33।।
सद् ग्रन्थों की रचना कर, श्री सरस्वती–भण्डार भरा,
स्वामी ने संस्कृत–भाषा का, दूर–देशों में प्रसार किया ।।34।।
अलौकिक प्रतिमा पीताम्बरा की, सम्वत् उन्नीस सौ वाउनवे में पधराई,
वनखण्डेश्वर पीठ तभी से, श्री पीताम्बरा पीठ कहलाई ।।35।।
सन् उन्नीस सौ बासठ ई. में जब चीन ने धाबा बोला,
तब राष्ट्र–रक्षा करने को, श्री शंकर ने त्रिनेत्र खोला ।।36।।
राष्ट्र–गुरु श्री स्वामी जी ने, राष्ट्र–रक्षा अनुष्ठान किया,

देश के मूर्धन्य साधकों ने, अनुष्ठान में भाग लिया ।।37।।
इक्कीस दिन के अल्प समय में, रक्षा–अनुष्ठान सम्पन्न हुआ,
धूमावती–माँ ज्येष्ठा ने, शत्रु–सैन्य को नष्ट किया ।।38।।
स्वामी जी ने शाक्त–धर्म अरु, राष्ट्र–धर्म की रक्षा की,
सब धर्मों का सम आदर कर, स्मार्त्त धर्म की रक्षा की ।।39।।
शाक्त–धर्म अरु राष्ट्र–धर्म, रक्षा करने शंकर आये,
वनखण्डी को तीर्थ बनाकर, अमृतेश्वर शिव कहलाये ।।40।।
एक अनूठा ब्रह्म यज्ञ भी, राष्ट्र–गुरु ने पूर्ण किया,
जिसे देखकर भक्त जनों ने, मानव–जीवन सफल किया ।।41।।
तुम कौन हो? ऐसा एक प्रश्न, वे प्रायः पूछा करते थे,
सुन्दर–सरल मधुर वाणी में, आत्मज्ञान करवाते थे ।।42।।
सम्वत् बीस सौ छत्तीस में, ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी–बुधवार,
राष्ट्र–गुरु श्री स्वामी जी ने, प्रकट किये अपने उद्‌गार ।।43।।
हंसकर बोले पूज्य गुरुजी, अब कार्य धर्म का पूर्ण हुआ,
धर्म–ज्ञान–जप–तप विधियां सब, साधक–जन को सौंप दिया।।44।।
माँ पीताम्बरा के सन्मुख, पूरब–दिशि आप समाधि लिए,
दक्षिण दिशि धूमावती धाम, स्वामी अमृतेश्वर रूप लिये ।।45।।
त्रेता में श्री रामचन्द्र ने, दशरथ–गृह अवतार लिया था,
वनोवास का कारण लेकर, रावण–वंश विनाश किया था ।।46।।
द्वापर में श्रीकृष्ण–रुप में, वसुदेव–नन्द गृह जन्म लिया,
मथुरा में श्री कृष्ण चंद ने, कंस–राक्षस वंश विनाश किया ।।47।।
जब जब भारत में धर्म ग्लानि, इस वसुन्धरा पर होती है,
तब तब धरती पर धर्म–रक्षा, हित दैव–शक्ति आ जाती है ।।48।।
इस तरह जब भारत माँ को शाक्त–धर्म की ग्लानि प्रकटी,
शिव–शंकर अवतरित हुए अरु, वह स्वामी रूप शक्ति प्रकटी ।।49।।
शिव–शंकर अनामि स्वामी बन, वनखण्डेश्वर ढिंग आये,

तन है नश्वर स्थूल काय, प्रभु ब्रह्मलीन हो बतलाये ।।50।।
धन्य–धन्य वे साधक–जन है, सानिध्य गुरु का जो पाये,
शंकर–स्वामी गुरु कृपा ने, अगणित जीवन सफल बनाये ।।51।।
मानवता का पाठ पढ़ाकर, धर्म–ज्ञान का सार बताया,
शक्ति–साधना–रत रहने का, हम सबको सनमार्ग दिखाया ।।52।।
देश–भक्ति अरु मातृ भक्ति का, हम सबको उपदेश दिया है,
पीताम्बरा इष्ट देवि का, मंत्र–जाप आदेश दिया है ।।53।।
प्रातः स्मरणीय राष्ट्र–गुरु, अब आश्रम के कण–कण में,
जो जन माने सच्चे मन से, उसे प्रभु मिलते क्षण–क्षण में ।।54।।
पूज्य गुरु स्वामि अनाम का, दूर–विदेशों में नाम हुआ,
शक्ति–साधना रत रहने से, इस सिद्ध पीठ का नाम हुआ ।।55।।
शक्ति–साधना तपस्थली से, भव–ताप–तपित जन शांत हुआ,
भव्य–देव–मूर्तियाँ पधरा कर, महातीर्थ सम धाम हुआ ।।56।।
दन्त–वक्रेश्वर–दतिया का, दूर–देशों तक गान हुआ,
दतिया नगरी है लघुबस्ती, जिसका सर्वत्र नाम हुआ ।।57।।
मन्दिर–बाग, जलाशय सुन्दर, पीठ–तीर्थ की शोभा है,
यज्ञ–स्थल, सरस्वती मन्दिरम् हरिद्राकुण्ड मन मोहा है ।।58।।
जप–जप अरु यज्ञों का स्थल, महातीर्थ का शुभ स्थान,
दुर्लभ देव प्रतिष्ठायें यहां, राष्ट्र–गुरु का मणिपुर धाम ।।59।।
स्थूल त्याग प्रभु सूक्ष्म हुये, गुरु अमृतेश्वर–रूप कहाये,
दतियावासी धन्य हुयें जो, परमगुरु को सन्मुख पाये ।।60।।
"रतन" पा लिया परमगुरु को, दतिया विश्वनाथ हैं स्वामी,
साधक–जन नित दर्शन करते, अमृतेश्वर–रूप में स्वामी ।।61।।

महाशिवरात्रि
(शुक्रवार)
दिनांक : १६.२.६३

चरण सेवक : रतन सिंह परमार (रत्न)
सेवक : श्री पीताम्बरापीठ (वनखण्डेश्वर)
दतिया (म.प्र.)

श्री अमृतेश्वर

अमृतेश्वर को जानिये,
शिव का सुन्दर रूप।
ऐसा सुन्दर है नहीं,
कोई यहां सरूप ।।1।।

शिव सन्यासी भेष में,
दतिया आये आप।
जन–जन को माला गहा,
हरे पाप संताप ।।2।।

वनखण्ड़ी में बैठकर,
हुए तपस्या लीन।
सन् बासठ के युद्ध में,
हारा इनसे चीन ।।3।।

भारत की महिमा रखी,
युद्ध चीन से जीत।
हारा दुश्मन आप से,
देखो प्रभु की रीत ।।4।।

शाक्त–धर्म रक्षार्थ ही,
रखा प्रभु ने भेष।
दुश्मन सारे डर गये,
बचा न कोई शेष ।।5।।

मन्दिर–मन्दिर देवता,
देख रहे यह कर्म।
पापी हारा आप से,
रखा आपने धर्म ।।6।।

"रतन" जतन कर बन गया,
सेवक, इनका दास।
मन में ऐसे रम गए,
बोले हर इक सांस ।।7।।

अमृतेश्वर स्वामी

श्री अमृतेश्वर शिव हैं स्वामी,
ब्रह्मलीन हुये तब जग–जाना।
मणिपुर धाम विराजे जाकर,
तब हमने उनको पहिचाना ।।1।।

जिस पर कृपा हुई है उनकी,
वही जानता उनकी माया।
वैसे जीवन क्षण भंगुर है,
क्षण भंगुर है जग की माया ।।2।।

चारों वेदों के हैं ज्ञाता,
तन्त्र शास्त्र है जिनको भाता।
कमल–माल कर में हैं धारे,
श्री–मुख मीठे वचन उचारे ।।3।।

वेद–पुराण प्रभु को अति सोहें,
वाणी से सबका मन मोहें।
"रतन" जतन से सेवा कीजे,
अमृतेश्वर से मुक्ति लीजे ।।4।।

श्री अमृतेश्वर

अमृतेश्वर–अमृतेश्वर जपते रहो,
श्री चरणों में सिर को झुकाते रहो।
गुरु भक्ति में मन को लगाते रहो,
गुरु–वचनों को मन में समाते रहो ।।1।।
अमृतेश्वर.....

श्री शिवशंकर–शिवशंकर जपते रहो,
श्री स्वामी को मन में बसाते रहो।
दिन–प्रतिदिन गुरुभक्ति बढ़ाते चलो,
अपना नर–जीवन सफल बनाते चलो ।।2।।
अमृतेश्वर.....

याद आयेगा उसको कभी न कभी,
पास पावेगा गुरु को कभी न कभी।
ऐसा विश्वास मन में बिठाते चलो,
"रतन" जतन कर गुरु को बुलाते चलो ।।3।।
अमृतेश्वर.....

श्री अमृतेश्वर

अमृतेश्वर–शिव जानिये,
श्री शिव सन्यासी–भेष।
शाक्त–धर्म औ लोक–हित,
शिव दतिया–किया प्रवेश।।1।।

स्वामी–भेष आये थे शिव,
जब दतिया वासी थे क्षुब्ध।
स्वामी वनखण्डेश्वर पर रहे,
पीठ के सिद्ध हुये तब मुग्ध।।2।।

जिन पर कृपा गुरु की रही।
प्रभु स्वयं जनाया आप।
उन स्वामी भेष में शिव लख,
जिन्हें हुआ था ज्ञान प्रकाश।।3।।

स्वामी ब्रह्मलीन हो सूक्ष्म है,
माँ! पीठ अमृतेश्वर–भेष।
स्वामी आश्रम के कण–कण वसे,
श्री स्वामी शिव के भेष।।4।।

श्री अमृतेश्वर आराधना,
भक्तगण करते आठोंयाम।
जो जन सेवत भाव से,
वे पाते शिव का धाम।।5।।

गुरु कृपा पाकर हुये,
गुरु–भक्त जीवन मुक्त।
"रतन" विनय गुरु–चरण में,
रहे मन गुरु–भक्ति में लिप्त।।6।।

राष्ट्र-गुरु

हे राष्ट्र गुरु! मम परम गुरु,
तुम शिव शंकर अनामि स्वामी।
पीताम्बरा–भक्त, तुम शिव की शक्ति,
हो चारों वेदों के अनुगामी ।।1।।
हे राष्ट्रगुरु!.....

हे राष्ट्र गुरु! तुम धर्म गुरु,
हो शाक्तधर्म के अनुगामी।
तुम जन–जन के हो प्रिय स्वामी,
हो तन्त्र शास्त्र के अनुगामी ।।2।।
हे राष्ट्रगुरु!.....

दीनन प्रतिपालक, दुष्टन घालक,
हो देश भक्ति के अनुगामी।
नश्वर शरीर को त्याग दिया,
प्रभु ब्रह्मलीन हुये जग जानी ।।3।।
हे राष्ट्रगुरु!.....

शिव सन्यासी भेष रख आये,
तब भी जाना न तुम्हें स्वामी।
"रतन" जतन कर जाना जिसने,
उन जाना अमृतेश्वर स्वामी ।।4।।
हे राष्ट्रगुरु!.....

स्वामी मोहि

स्वामी मोहि अपनी शरण रखो,
मैं चरणों में पड़ा रहूँगा
तुम मुझको प्रभु नित्य लखो।
स्वामी मोहि अपनी शरण रखो ।।1।।

तुम बिन मेरा यहाँ न कोई,
तुम यह जानों बात।
भुला नहीं मैं सकूं कभी भी,
दिन हो चाहे रात ।।2।।

भला–बुरा जैसा हूँ स्वामी?
हौं, सेवक मैं तेरा।
मेरी विनय यही है स्वामी ?
ध्यान रखो प्रभु मेरा ।।3।।

जनम–जनम से "रतन" हृदय का,
यह विश्वास न टूटे।
दुनिया चाहे रूठे मुझसे,
प्रभु पर तू ना रूठे ।।4।।

स्वामी तुम शिवशंकर हो

स्वामी तुम तो शिवशंकर हो,
ऐसा मैंने जान लिया।
तुम ही भाग्य विधाता मेरे
ऐसा मैंने मान लिया ।।1।।

धर्म कार्य करने को आए,
रखकर रूप विधाता का।
दुनिया को सब कुछ दे डाला,
क्या कहना इस दाता का ।।2।।

आज "रतन" ने स्वप्न लोक में,
तेरा रूप निहारा है।
यही रूप तो जगती भर को,
बन गया आज सहारा है ।।3।।

गुरु-सम ब्रह्म नहीं

गुरु–सम ब्रह्म नहीं भाई,
अब यह बात समझ पाई।
गुरु से ज्ञान मिले भाई,
तब कहिं ब्रह्म समझ पाई ।।1।।

ब्रह्म से गुरु बड़े मानो,
गुरु ही परब्रह्म जानो।
"रतन" विश्वास अटल जानो,
ब्रह्म से गुरु बड़े मानो ।।2।।

गुरु-कृपा

गुरु–कृपा सब से सबल,
जानत सकल जहान।
गुरु–कृपा पाकर हुये,
लघुतम शिष्य महान।।1।।
गुरु–कृपा में निहित है,
अर्थ–धर्म, औ काम।
अन्त समय में जीव को,
मिले मोक्ष शिवधाम।।2।।
गुरु की सेवा कीजिये,
त्याग कपट छल–छिद्र।
"रतन" जतन सो पाइए,
गुरु–कृपा है सिद्ध।।3।।

गुरुदेव

गुरुदेव! तुम्हें सादर प्रणाम,
गुरुदेव! तुम्हें शत्–शत् प्रणाम।
तुम्ही कृष्ण हो राम तुम्ही हो
ब्रम्ह तुम्ही अभिराम तुम्ही हो।।1।।
जब से गुरु तुम्हने अपनाया,
मैंने जीवन धन्य बनाया।
कृपा आपकी मिली है जबसे,
मैंने सब कुछ जग में पाया।।2।।
भूल–चूक सेवक से होती,
क्षमा आप क्षण में कर देते।
तन में मन में इस जीवन में,
खुशियों की झोली भर देते।।3।।
स्वामी! इतनी कृपा कीजिए,
गुरु–महिमा स्तवन लिखवा दो।
"रतन" दास पर कृपा कीजिये,
मुझको ऐसी राह दिखा दो।।4।।

गुरु-भक्ति

मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि्
ले लो स्वामि्
मुझे अपनी चरण–रज दे दो स्वामि्
दे दो स्वामि् ।।1।।

हे स्वामी ऐसा वर दे दो,
गुरु भक्ति में सुकाव्य लिखा दो।
जग के मोह–जाल से गुरुवर!
कृपा–कोर कर मुझे छुड़ालो ।।2।।

मुझे अपनी शरण में
ले लो स्वामि्
मुझे शक्ति–पात वर दे दो स्वामि्
दे दो स्वामि् ।।3।।

"रतन" जतन कर अपने गुरु से,
शुभ आशिश ले मुक्ति कर लो।
मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि्
ले लो स्वामि्
मुझे सद्गुरु भक्ति दे दो स्वामि्
दे दो स्वामि् ।।4।।

गुरुः ब्रह्मा, गुरु विष्णु
गुरुः देवो महेश्वराः।
गुरुः साक्षात परब्रह्म,
तस्मै श्री गुरवे नमः ।।1।।

गुरु बिन कौन लगावे पार ?
गुरु बिन कोई न खेवन हार।।
मन में कर लो खूब विचार,
गुरु बिन होगा नहि उद्धार ।।2।।

गुरु से मिले ब्रह्म–साकार,
गुरु से मिले मोक्ष का द्वार।
"रतन" कहे सब गुरु भक्तों से,
गुरु ही है जीवन–आधार ।।3।।

स्वामी शिव

स्वामी तुम शिव शंकर निकले,
स्वयं अनामी रहकर छुपते।
ज्यों भस्मासुर को वर देकर,
भोला आक पुष्प में छुपते ।।1।।

मुख–मण्डल की शोभा न्यारी,
माथे अर्द्धचन्द्र सुखकारी
वाघम्बर का आसन धारें
श्री मुख से सदा वेद उचारें ।।2।।

माँ पीताम्बरा को पधराकर
शाक्त–धर्म बहु ग्रन्थ रचाकर
श्री सरस्वती–भण्डार भराकर,
सिद्ध पीठ को तीर्थ बनाकर ।।3।।

धूमावती मां पधराकर,
यज्ञ स्थल विशाल बनवाकर।
राष्ट्र–रक्षा अनुष्ठान कराया,
मातृ–भूमि का मान बढ़ाया ।।4।।

श्री पीताम्बरा-विनय

हे! जननी माँ पीताम्बरा,
मैं तुम्हें पुकारूं पल–छिन में।
तेरे दर्शन की अभिलाषा माँ!
लगी हुई है इस मन में ।।1।।

माता! तुम तो दयामयी हो,
क्षमामयी करुणामयी हो।
मैं अज्ञानी बालक तेरा,
माँ मुझको तुम क्षमा करो ।।2।।

अपनी कृपा कोर से माता
मेरे सभी पाप हर लीजै।
मैं हूं नेत्र–कष्ट से पीड़ित,
मेरी पीड़ा माँ हर लीजै ।।3।।

मैं। हूं सेवक श्री चरणों का,
मुझको श्री चरणों में ले लो।
"रतन" विनय कर रहा आपसे,
मुझको मातृ–भक्ति वर दे दो।।4।।

स्वामी-विनय

स्वामी! मेरे अवगुण चित्त न धरो,

गुरु जी तुम भव से पार करो।

मैं अज्ञानी सेवक तेरा,

मोहि अज्ञान तिमिर ने घेरा ।।1।।

अपनी कृपा दृष्टि से स्वामी,

तुम मेरा अज्ञान तिमिर हरो।

अपनो जान छोड़मत दीजो,

स्वामी! मोहि अपनी शरण रखो ।।2।।

तुम्हरे बिन मेरा यहां न कोई,

स्वामी! मैं तुम्हारी ही शरण पड़ो।

"रतन" विनय करे श्री स्वामी से,

मोहि भव–सागर से पार करो ।।3।।

श्री पूज्यवाद गुरुदेव की चरण पादुका

गुरु दीक्षा का है यहां,
सुन्दर सुखद विधान।
गुरु चरणों की पादुका,
ही करती कल्याण।
गुरु चरणों की पादुका
का करके स्पर्श,
लेते दीक्षा शिष्यजन,
जपते मंत्र सहर्ष।
सदाचार से, भक्ति से,
श्रद्धा विनय प्रधान।
जब तक होगा पीठ पर,
पूजा का सुविधान।
माता श्री पीताम्बरा,
श्री गुरु जी के साथ।
यहां बास नित करेंगे,
ले कल्याणी हाथ।

श्री पीताम्बरा-पीठ न्याय मण्डल का गठन

शुभ सम्वत् को जानिये
दो हजार चौतीस ।
पीठ व्यवस्था हेतु तब,
न्यास रचा गुरुःईश ।
स्वयं रहे अध्यक्ष गुरु,
जिनका निर्मल काम ।
बने सचिव पंडित श्री
सूर्य देव गुणवान ।
कोषाध्यक्ष बने तभी,
श्री सावला सुजान ।
नाम लेत सुख होत है,
हरिराम श्रीमान ।
ब्रह्मलीन जब गुरु हुये,
सभाध्यक्ष का पद रिक्त ।
बनी राजमाता सिंधिया,
अध्यक्षा गुरुभक्त ।
सप्त सदस्यों से रहा,
सुखद संगठित न्यास।
है अनुशासन यहां पर,
होता सदा विकास ।

श्री गुरु-वन्दना

श्री अनंतश्री पीताम्बरा–पीठाधीश्वर
राष्ट्रगुरु दतिया के प्रति

श्रद्धा–सुमन 1

प्रातः स्मरणीय राष्ट्रगुरु, मम हृदय–कमल में वास करो,
मैं आस करूं नित दर्शन की, स्वामी दर्शन दो न निराश करो ।।1।।
प्रातः स्मरणीय .....
जब बांह थाम ली निजकर में, स्वामी भव--सागर से पार करो,
भव–सिंधु–भंवर में नाव फंसी, स्वामी चरण कृपा से पार करो ।।2।।
प्रातः स्मरणीय .....
स्वामी हमें छोड़कर मुक्त हुये, मझधार–बीच में नाव मेरी,
भव–सिंधु भंवर जीवन नैया, स्वामी कृपा–कोर कर पार करो ।।3।।
प्रातः स्मरणीय .....
पीताम्बरा माँ के लाल हो तुम, काल नियन्ता महाकाल हो तुम,
हम तड़प रहे तब दर्शन को, स्वामी दर्शन दो और निहाल करो ।।4।।
मन धीर धरे नहिं पल भर को, नहि चैन मिले मन क्षण भर को,
रट एक यही तब दर्शन की, स्वामी सुनो पुकार भक्त जन की ।।5।।
प्रातः स्मरणीय .....
मां पीताम्बरा के सन्मुख, पूरब–दिश स्वामि समाधि लिये,
दक्षिण–दिश धूमावती–धाम, स्वामि पीठ–मध्य निवास किये ।।6।।
प्रातः स्मरणीय .....
स्वामी स्थूल त्याग कर सूक्ष्म हुये, पुनः शिवशंकर के रूप सुहाये,
"रतन" पा लिया परम् गुरु को, स्वामी अमृतेश्वर रूप में पाये ।।7।।
प्रातः स्मरणीय .....

रे मन! गुरु बिन कोई न दूजा

रे मन! गुरु बिन कोई न दूजा, परम गुरु से नाता जोडो,
इष्ट देव का जप अरु पूजा रे मन! गुरु बिना कोई न दूजा ।।1।।

रे मन! गुरु बिन .....

माता पिता, भाई, बन्धु गुरु सारा कुटुम्ब–जाति कबीला,
ये–सब है स्वारथ के साथी, मनुवा है संसार ठगीला ।।2।।

रे मन! गुरु बिन .....

गुरु ही ब्रह्म, गुरु ही विष्णु, गुरु ही देव–महेश्वरः
गुरु ही साक्षात परब्रह्म हैं, जिनका धर ध्यान करो पूजा ।।3।।

रे मन! गुरु बिन .....

रे मन! गुरु कृपा से ज्ञान सिखाया

गुरु कृपा ने ही अपनाकर, धर्म–कर्म का मार्ग बताया,
माँ पीताम्बरा जग–जननी का, प्रथम बार परिचय करवाया ।।1।।

रे मन! गुरु कृपा ने ज्ञान सिखाया।

यह मेरे मन को अति भाया, गुरु–कृपा से इस जगती का,
झूठा, मोह–जाल छुड़वाया, "रतन" कहे रे। मन अज्ञानी,
तू झूठी माया में भरमाया ।।2।।

श्री गुरु-भक्ति भजन

जिन हृदय में गुरु देव बसे, उन और का नाम लियो न लियो,
जिन रसना ने गुरु देव जपो, उन और का जाप कियो न कियो ।।1।।
जिन हृदय में .....

जिन नत मस्तक श्री चरण छुये, उन और को शीश झुकौ न झुको,
जिन तन–मन से गुरु सेवा की, उन और का ध्यान कियो न कियो ।।2।।
जिन हृदय में .....

जिन निज माता पिता की सेवा की, उन गंग स्नान कियो न कियो
जिन मातृ–भूमि की सेवा की, उन और को छत्र लियो न लियो ।।3।।
जिन हृदय में .....

जिन मन–मन्दिर में गुरु देव बसे, उन और को वास कियो न कियो,
जिन गुरु–आज्ञा नित शीश धरी, उन और पे ध्यान दियो न दियो ।।4।।
जिन हृदय में .....

जिन भक्ति भक्त–भगवन्त गुरु को एक लख्यो,
उन और देवन को नाम लियो न लियो ।।5।।
जिन हृदय में .....

जिन गुरु भक्ति में प्रेम रखो, उन और में प्रेम रखो न रखो,
जिन गुरु–तत्व नव रत्न लियो, उन और 'रतन' धन लियो न लियो ।।6।।
जिन हृदय में .....

गुरु की शरण चलो

गुरु की शरण चलो मेरे भाई, ब्रह्म की शरण चलो मेरे भाई ।।1।।
गुरु ही ब्रह्म, गुरु ही धर्म, गुरु बिन दूजा न अपना कोई ।।2।।
माता–पिता गुरु ही जानो, परब्रह्म गुरु को पहचानो ।।3।।
सत्य की शरण चलो मेरे भाई, धर्म की शरण चलो मेरे भाई ।।4।।
जो कुछ दिखे इस सृष्टि में, गुरुमय है अपनी दृष्टि में ।।5।।
गुरु से भिन्न न कोई वस्तु "रतन" कहे गुरु कृपा ही एवमस्तु ।।6।।
गुरु की शरण चलो मेरे भई, उसकी शरण चलो मेरे भाई ।।7।।

श्री गुरु चरण–रज

श्री गुरु–चरणों की रज, भक्त को पावन कर देती है ।
भव–ताप–तपित जन–जन के मन की, पीड़ा हर लेती है ।
श्री गुरु–चरणों की पावन रज से, भक्त का मोह–जाल कटता है ।
इस असार संसार जगत का, बुद्धि से अंधकार हटता है ।
श्री गुरु–चरणों की पावन धूल, शूल को फूल बना देती है ।
"रतन" कहे श्री गुरु–चरण रज, भक्ति का सागर भर देती है ।

श्री गुरु मणिपुर धाम चलो

श्री गुरु मणिपुर धाम चलो,
सुबह चलो अरु शाम चलो।
पूज्य गुरु के दरश करो,
भव–पाप–ताप को दूर करो।।1।।
श्री गुरु .....

महासरस्वती, महालक्ष्मी मां!
महागणेश अरु महाकाली।
राष्ट्रगुरु शंकर अनाम से,
श्री मणिपुर धाम शोभा आली।।2।।
श्री गुरु .....

श्री राष्ट्रगुरु को नमन करो,
मानस का जीवन सफल करो।
श्री चरणों की शरण गहो,
तन–मन–धन सब अर्पण कर दो ।।3।।
श्री गुरु .....

"रतन" कहैं सब गुरु भक्तों से,
श्री शंकर काशी–धाम चलो।
'स्वामी' शंकर को नमन करो,
मणिपुर–धाम विराजे शंकर।।4।।
श्री गुरु मणिपुर धाम चलो.....

गुरु बिन कौन लगावे पार

गुरु बिन कौन लगावे पार, गुरु बिन कोई न खेवन हार।
इस असार–संसार जगत में, माया का न पारावार ।।1।।
गुरु से ज्ञान ध्यान ले लीजे, नर देही को पावन कीजे।
नर देही को देय कसौटी, चंचल–मन को काबू कीजे ।।2।।
गुरु से आत्म–ज्ञान कर लीजे, परब्रह्म से नाता कीजे।
गुरु–आज्ञा सिर धर चित्त दीजे, तेरा हो जावेगा उद्धार ।।3।।
माया जाल जगत का सपना, जहां न तेरा कोई अपना।
मनुवाँ झूठा है यह संसार, गुरु बिन कौन लगावे पार ।।4।।
सद्गुरु ने जब राह बताई, भ्रम के जाल से मुक्ति पाई।
साधन–मार्ग मोक्ष का पाया, आत्म–बोध कर चेतन पाया ।।5।।
तू भव–सागर से होगा पार, गुरु बिन कोई न खेवन हार।
मनुवा हो जावेगा उद्धार गुरु बिन कौन लगावे पार ।।6।।

यह उपदेश गुरु का है

"जपा सिद्धी जपा सिद्धी, जपा सिद्धी न संशयः"
जप से सिद्धी निश्चय मिलती, इसमें संशय मत मानो ।
पीताम्बरा हैं जग की माता, यह मन में निश्चय मानो ।।1।।
प्रथम गुरु से गुरु–दीक्षा लें, दृढ़ विश्वास से जाप करो ।
गुरु–आज्ञा का ध्यान रखो, श्री पीताम्बरा का जाप करो ।।2।।
पीताम्बरा हैं जग की जननी, हम सब उसके पुत्र कहाते ।
जग–जननी की आराधना से, हम सब साधक नहीं अघाते ।।3।।
परम गुरु श्री स्वामीजी ने, माँ पीताम्बा का जाप किया ।
स्वामी प्रभु सर्वत्र हुए अरु, राष्ट्र–गुरु–पद प्राप्त किया ।।4।।
"रतन" जतन कर अपने गुरु की, विशेष आज्ञा का ध्यान रखो।
जप से सिद्धी निश्चय मिलती, गुरु–वचनों पर विश्वास करो।।5।।

गुरु ही सब कुछ है

गुरु ही पूजा गुरु ही जप है, गुरु बिन व्यर्थ तपस्या–तप है।
गुरु ही रचना गुरु ही निर्माता, गुरु सब का भाग्य–विधाता ।।1।।
गुरु ही माता गुरु ही पिता है, गुरु ही बन्धु अरु गुरु सखा है।
गुरु ही भक्ति गुरु ही शक्ति, गुरु बिन सूझे कोई न युक्ति ।।2।।
गुरु विष्णु है गुरु ही ब्रह्म, गुरु महेश है, गुरु परब्रह्म।
गुरु पथ–दर्शक गुरु आत्मा है, गुरु सर्वोपरि गुरु परमात्मा है ।।3।।
गुरु सृष्टि है सृष्टि गुरु में, गुरु भक्त में भक्त गुरु में।
गुरु जीवन है, गुरु जीवनोत्तर, गुरु–भक्ति में सारे उत्तर ।।4।।
गुरु हृदय में, गुरु कण–कण में, गुरु जगत में गुरु जन–जन में
गुरु–प्रथमाक्षर गुरु ही शिक्षा, गुरु ही ज्ञान है गुरु ही दीक्षा ।।5।।
गुरु धर्म है, गुरु पंथ है, गुरु ही आदि और गुरु अनन्त है।
गुरु कृष्ण है, गुरु ही राम है, गुरु इस जग का पूर्ण विराम है।।6।।
गुरु सार है इस जीवन का, गुरु मोक्ष है, इस जीवन का।
गुरु से ज्ञान–ध्यान, तप–बल है, गुरुकृपा में ही सब कुछ है।।7।।

चरण सेवक : रवीन्द्र सिंह परमार

गुरुजी मेरे अवगुण चित्त न धरो

गुरुजी मेरे अवगुण चित्त न धरो, मैं बालक तुम पिता हो मेरे।
रखो सदा चरणन को चेरे, गुरुजी मेरा अज्ञान–तिमिर हरो ।।1।।
गुरुजी मेरे अवगुण चित्त .....

इस असार संसार जगत में, माया–जाल के अंध कूप से।
चाहो तो पार, करो, गुरुजी मेरे भव–सिंधु पार करो ।।2।।
गुरुजी मेरे अवगुण चित्त .....

जब से गुरु चरण में आया, वरद–हस्त की मुझ पर छाया।
आप स्वयं–पिता कहो, मात पीताम्बरा
गुरुजी मेरे भव–पाप–ताप हरो ।।3।।
गुरुजी मेरे अवगुण चित्त .....

"रतन" यतन कर परम गुरु के कृपा–पात्र बनो,
गुरु–कृपा से असार जगत के मोह–जाल से बचो।
ज्यों पारस लोहा स्पर्श कर कंचन करत खरो,
त्यों हरि कृपा पाय भक्त को सद्गुरु मुक्त करो ।।4।।
गुरुजी मेरे अवगुण चित्त .....

गुरु-कृपा

जापर कृपा गुरु की होई,
तापर कृपा करें सब कोई ।।1।।
जापर कृपा स्वामि की होई,
माँ पीताम्बरा अपनावें सोई ।।2।।
मो पर कृपा गुरु की होई,
माँ पीताम्बरा अपनाया सोई ।।3।।
गुरु–कृपा से संस्कार पाया,
जो मेरे मन को अति भाया ।।4।।
माँ! ने कृपा कर मुझे अपनाया,
स्वगुरु ने योग्य बनाया ।।5।।
जगजननी ने पाला पोसा,
गुरु–कृपा ने अपनाया मोसा ।।6।।
"रतन" कहें मेरे गुरु सेव्य हैं,
धन्य–धन्य गुरु स्वयं ब्रह्म हैं ।।7।।

मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि!

मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि, ले लो स्वामि ।
मुझे अपनी चरण–रज दे दो स्वामि, दे दो स्वामि ।।
मैं अज्ञानी बालक ठहरा,
तेरी कृपा का शोर है गहरा ।
हौं नादान, फिर भी बहरा,
मेरी त्रुटियों को विसरादो स्वामि ।
मुझे अपनी चरण–रज दे दो स्वामि, दे दो स्वामि,
मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि, ले लो स्वामि ।।1।।
जब–जब जन्म मिले मानस का
मैं स्वामी की ही शरण पाऊँ ।
शिवशंकर स्वामि अनाम के,
मैं मधुर गीत सदा सुनाऊँ ।
मुझे अपनी चरण रज दे दो स्वामि, दे दो स्वामि ।
मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि, ले लो स्वामि ।।2।।
हे स्वामी ऐसा वर दे दो,
गुरु–भक्ति का सागर भर दो ।
"रतन" यतन कर परम गुरु से ।
शुभ आशिश ले मुक्ती कर लो ।
मुझे अपनी चरण–रज दे दो स्वामि, दे दो स्वामि।
मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामि, ले लो स्वामि ।।3।।

गुरुजी मैं सेवक तुम स्वामी!

गुरुजी मैं सेवक तुम स्वामी,
गुरुजी मैं हूँ अबोध तुम ज्ञानी ।
मो में तो में भेद बहुत है,
मैं मायावस तुम हो ज्ञानी ।।1।।
सत् संगत अरु गुरु कृपा से,
अभेद रखो तो मैं बढ़ भागी ।
गुरुकृपा में शक्ति बहुत है,
भक्ति, ज्ञान–भण्डार निहित है ।।2।।
गुरुकृपा से अनेक भक्त जन,
अज्ञानी से बन गए ज्ञानी ।
गुरु–कृपा से रामचंद्र ने,
मारा रावण वीर अभिमानी ।।3।।
गुरु–कृपा को कहं तक कहिये,
जिसे शेष–शारदा थके बखानी ।
"रतन" कहे श्रीगुरु–कृपा से,
भवसागर–पार होय प्राणी ।।4।।

श्रद्धा सुमन : १५

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं रात्रौ काले, गुरु बस जपता हूँ स्वामि नाम।

दीन–दुखी के तुम रखवारे,
भक्त जनों के कष्ट निवारें।
दुष्टों के भंजक हो स्वामी,
स्वीकारो मम नम्र प्रणाम।।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

द्वारे तेरे जो भी आता,
बिन माँगे सब कुछ पा जाता।
ऋद्धि, सिद्धि के दाता स्वामी,
फिर भी स्वामी आप अनाम।।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

पीताम्बा के आराधक हो,
मर्यादा के प्रतिपालक हो।
कण–कण में दृष्टिगोचर हो,
पूजूं तुम्हें प्रातः और शाम।।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

स्वामी तुम हो शिवशंकर
तुम ही ब्रह्मा, अरु विष्णु हो।
तुम ही रचनाकार जगत के,
आये धर्म सिखाने राम।।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

तन्त्र–मन्त्र तुमने, सिखलाया,
मातृ–भक्ति का मार्ग बताया।
गुरु चरणों की कृपा से ही,
बन जायें सब बिगड़े काम।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

शाक्त धर्म का मार्ग दिखाया,
तंत्र–शास्त्र का मर्म बताया।
देव अदेव नहीं मैं जानूँ
बस जपता हूँ स्वामी नाम।

गुरुदेव तुम्हें सादर प्रणाम, प्रभुवर तुम्हें मेरा प्रणाम
प्रातः सायं, रात्रौ काले, बस जपता हूँ स्वामि नाम।

यह आदेश गुरु का है

यह आदेश गुरु का है बस जाप करो,
श्री पीताम्बरा जग–जगनी का जाप करो।
यह आदेश गुरु का है ..... ।।1।।

श्री पीताम्बा जग जननी को याद करो,
श्री पीताम्बरा इष्ट देवि हैं ध्यान करो।
यह आदेश गुरु का है ..... ।।2।।

यह संसार असार है बन्धु याद रखो,
माँ! जग–जननी को प्यार करो–याद करो।
यह आदेश गुरु का है ..... ।।3।।

मानव–जीवन का यही लक्ष्य तुम याद रखो,
माँ पीताम्बरा दयामयी है नमन करो।
यह आदेश गुरु का है ..... ।।4।।

परम गुरु श्री स्वामी जी ने पीताम्बा का जाप किया,
परम ब्रह्म में लीन हुये यह भी सबने जान लिया।
यह आदेश गुरु का है ..... ।।5।।

"रतन" कहें सच बात यही दिन–रात जपो,
गुरु–वचनों पर विश्वास करो अरु जाप करो।
यह आदेश गुरु का है, सब जाप करो ।।6।।

श्री पीताम्बरा-वन्दना

श्री पीताम्बरा का जाप करो
श्री पीताम्बरा – जगजननी का जाप करो,
मानव जीवन का सार ग्रहण कर जाप करो।
यह आदेश श्री परम गुरु का तुम याद करो,
श्री पीताम्बरा – इष्ट देवि हैं याद रखो ।।1।।

यह असार–संसार जगत है कभी न भूलो याद रखो,
माँ! जग–जननी को प्यार करो, याद करो।
मानव–जीवन का यही लक्ष्य तुम जाप करो,
मानव जीवन है क्षण भंगुर तुम याद रखो ।।2।।

परब्रह्म में लीन हुए प्रभु हमने यह जान लिया,
इसीलिये दृढ़ निश्चय कर रात–दिन जाप करो।
ऐसा उपदेश गुरु का है, तुम निरंतर जाप करो,
श्री पीताम्बरा आदि शक्ति हैं ध्यान करो ।।3।।

"रतन" कहें सच बात यही सब जाप करो,
श्री पीताम्बरा – मात हमारी याद रखो।
श्री पीताम्बरा – जग – जननी का जाप करो,
श्री पीताम्बरा दयामयी हैं याद रखो ।।4।।

श्री पीताम्बरा जी की-वन्दना

हे! जग–जननी, मंगल करनी, दयामयी माँ! पीत–वसना।
आकर मुझको दर्शन दे दो, तेरे दरश की मेरी रटना ।।1।।

कब से पुकारूं माता तुझको, तुमने लगाई कितनी देरी।
'हौं' अज्ञानी बालक तेरा, तुझे पाने का मेरा वसना ।।2।।

दया करो हे मेरी माता, दे दो दर्शन में अकुलाता।
परमगुरु श्री स्वामी जी ने, जोड़ दिया है तुमसे नाता ।।3।।

बता दिया है श्री स्वामी ने, मैं हूं (गुरु) पिता–पीताम्बा माता।
दया करो मुझ पर जग–जननी, मुझे अपनालो मैं विलखाता ।।4।।

आकर मुझको मार्ग दिखा दो, भवसागर में मैं भरमाता।
तू! मेरी माता गुरु–पिता है, इसीलिये मैं नहिं भयखाता ।।5।।

हे! जग–जननी मंगल करनी, दयामयी माँ पीत वसना।
मैं तेरा बेटा तू! माता मेरी, तुम्हें! पुकारे मेरी रसना ।।6।।

हे! माता तू! ऐसा वर दे, मातृ–प्रेम का सागर भर दे।
जनम–जनम मैं तेरे गुण गाऊं, तेरे ही गीत सुनू और सुनाऊं ।।7।।

"रतन" यतन कर मातृ–प्रेम का, हृदय–पात्र भर दे सारा।
जनम–जनम यह दास आपका, कृपा पात्र होवे प्यारा ।।8।।

श्री पीताम्बरा-विनय

माँ! पीताम्बरा तुझे बुलाऊँ,
तेरे दर्शन कर सुख पाऊं।।1।।
माता! मुझको दर्शन दे दो,
अपनी दुहिता को वर दे दो।।2।।
माता! तू तो दयामयी है,
मेरी भक्ति नयी–नयी है।।3।।
मैं नहिं जानूं तेरी भक्ति,
दया करो माँ! दे दो शक्ति ।।4।।
मैं अबोध बालिका हूं तेरी,
तेरे चरणों की हूँ चेरी।।5।।
माता मुझको दर्शन दे दो
अपनी भक्ति का वर दे दो।।6।।
क्षमा करो हे! दयामयी माँ,
क्षमाधात्री, करुणामयी माँ।।7।।
भूल–चूक पर ध्यान न दीजे,
'पीताम्बरा'' क्षमा कर दीजे।।8।।

रचियता – कु. पीताम्बरा परमार एम.ए.बी.एड.
पुत्री रतनसिंह परमार, दतिया (म.प्र.)

श्री गुरु महिमा

" गुरु ही पूजा, गुरु ही जप है, गुरु बिन व्यर्थ तपस्या तप है" ।।

हे! पीताम्बरा पीठाधीश्वर, तुमको बारम्बार प्रणाम।
जो जन आते तेरे द्वारे, पूर्ण होय सब उनके काम।
हे पीताम्बरा ..... ।।1।।

निर्बल के तुम बल हो स्वामी, सब प्रश्नों के उत्तर स्वामी।
रोगी, दुखी दीन, दुर्बल को, करते स्वामी शान्ति प्रदान।
हे पीताम्बरा ..... ।।2।।

जाति धर्म का भेद नहीं कुछ, धर्माधर सब पंथ समान।
तेरे ज्ञान, प्रकाश–पुंज के, जलें दीप प्रातः और शाम।
हे पीताम्बरा ..... ।।3।।

राष्ट्र–धर्म के रक्षक हो तुम, मानवता के दिग्दर्शक तुम।
सद्ग्रन्थों के सर्जक स्वामी, स्वीकारो मम नम्र प्रणाम।
हे पीताम्बरा ..... ।।5।।

ऋद्धि–सिद्धि के दाता स्वामी, साधक जन को देते ज्ञान।
सुख–समृद्धि से धनी बने वो, जो आये इस पावन धाम।
हे पीताम्बरा ..... ।।6।।

राष्ट्र–गुरु तुम शिव रूप हो, धर्म–ज्ञान की अक्षय खान।
जप तप और यज्ञों का स्थल, पीठ बना दी स्वर्ग समान।
हे पीताम्बरा ..... ।।7।।

मूर्त रूप में आप विराजे, पीठ स्थल में "मणिपुर धाम"।
स्थूल त्याग कर सूक्ष्म हुए, शक्ति साधना के परिणाम।
हे पीताम्बरा ..... ।। 8 ।।

धर्म–ग्रन्थ नहीं पढ़ पाया, वेद ऋचायें नहीं रट पाया।
देव–अदेव नहीं मैं जानूं, बस जपता हूँ स्वामी नाम।
हे पीताम्बरा ..... ।। 9 ।।

रहस्य बताकर तन्त्र–मन्त्र का, भक्त–जनों को ज्ञान दिया।
तुमको पाकर धन्य हुआ जग, फिर भी रहते आप अनाम।
हे पीताम्बरा ..... ।। 10 ।।

अमृतेश्वर शिव–रूप आपका, दतिया विश्वनाथ हे स्वामी।
दे दो मुझको यह वरदान, रहूँ शरण में आठों याम।
हे पीताम्बरा ..... ।। 11 ।।

चरण सेवक – रवीन्द्र सिंह परमार

श्री स्वामी नाम-जप

हे! स्वामी, स्वामी, स्वामी!
हे! स्वामी, स्वामी, स्वामी!
तुम हो अन्तर यामी, स्वामी,
तुम हो अन्तर यामी ।।1।।
हे! स्वामी स्वामी स्वामी।

मुझ सेवक को अपना लीजे,
सेवा का मुंह अवसर दीजे,
ध्यान रहे अपने सेवक का,
मैं विरथा भटक न जाऊं ।।2।।
हे! स्वामी स्वामी स्वामी!!

मैं सेवक हूँ तब चरणों का,
बालक हूँ श्री पीताम्बरा का।
भला-बुरा मैं जैसा भी हूँ,
कृपा-दृष्टि कर अपना लीजे ।।3।।
हे! स्वामी स्वामी स्वामी!!

भूल-चूक पर ध्यान न दीजे,
अबोध-जान क्षमा कर दीजे।
तुम्हें छोड़कर किसको ध्याऊं ?
और किसी को चित्त नहीं लाऊं ।।4।।
हे! स्वामी, स्वामी, स्वामी!!
तुम हो अन्तर यामी,
हे! स्वामी, स्वामी, स्वामी.....

जग-जननी

हे! जग–जननी मंगल करनी,
दयामयी माँ पीत वासना।
तेरे दरस की आस लगी है,
निश दिन करूं तेरी रटना ।।1।।

हे! जग जननी .....
हौं सेवक तब श्री चरणों का,
तुमको छोड़ कहां जाऊँ।
तुम बिन मेरा यहां न कोई,
मैं तुम्हें छोड़ किसको ध्याऊँ ? ।।2।।

हे! जग जननी .....
तेरे दरस को मैं ललचाऊँ,
बिन गुरु कृपा तुझे नहीं पाऊँ।
गुरु आशिष पाने की रे। मन,
गुरु शरणागत मैं हो जाऊँ ।।3।।

हे! जग जननी .....
हे! माता इतना वर दीजे,
जनम–जनम तब भक्ति दीजे।
"रतन" जनत कर इतना पाऊँ,
सदा आपको ही मैं ध्याऊँ ।।4।।

हे! जग जननी .....
हे! जग जननी जग की माता,
बिन तेरे अब कुछ नहिं भाता।
कृपा दृष्टि पाने को तेरी,
प्रतिदिन–प्रतिक्षण मैं अकुलाता ।।5।।
हे! जग जननी .....

मानव का परम लक्ष्य

पूर्ण शान्ति प्राप्त कर लेना, ही मानव जीवन का लक्ष्य है।
मानवता पर चलते हो, यही सही मानवता है ।।1।।
देश समाज हित कार्य करना, यही सही सामाजिकता है।
लोक–परलोक सम्हाले रहना, यही सही दूरदर्शितता है ।।2।।
ईश्वर भक्ति अरु देश भक्ति, जाग्रित हो तो साधना है।
पूर्ण शान्ति प्राप्त करना, तो माया रहित होना है ।।3।।
पर ब्रह्म से नाता जोड़ो, जहां पर तुझको जाना है।
यहाँ न कोई अपना जानो, संसार मुसाफिर खाना है ।।4।।
मोह–नींद में जागो प्यारे, यहाँ माया का ही सपना है।
मानव–लक्ष्य प्राप्त करना, तो सद्गुरु की शरण–आना है ।।5।।
साधन मार्ग मोक्ष पाने को, तुम सद्गुरु शरण गहो भाई।
गुरु कृपा में सब कुछ समझो, पूर्ण शान्ति पाओ भाई ।।6।।
"रतन" कहैं सब मानव जन से, आदर्श मार्ग चलो भाई।
गुरु कृपा में सब कुछ मिलता, पूर्ण शान्ति पाओ भाई ।।7।।

श्री स्वामी नाम–भजन

तन से कहो मन से कहो, स्वामी कहो शंकर कहो ।।1।।
भक्तों के प्रतिपाल कहो, दुष्टों के काल कहो ।।2।।
शंकर की भक्ति कहो, पीताम्बरा–भक्त कहो ।।3।।
सन्यासी संत कहो, सच्चे अवधूत कहो ।।4।।
गुरु कहो ब्रह्म कहो, वनखण्डी नाथ कहो ।।5।।
अमृतेश्वर – शंभु कहो, दतिया–विश्वनाथ कहो ।।6।।
भक्तों के साध्य कहो, दतिया के भाग्य कहो ।।7।।
महा तन्त्राचार्य कहो, अरू–वेदाचार्य कहो ।।8।।
अनेक भिन्न नाम कहो, सचमुच अनाम कहो ।।9।।
दीनन हितकारी कहो, मानव के पुजारी कहो ।।10।।
"रतन" सद्–गुरु कहो, राष्ट्र के गुरु कहो ।।11।।
तन से कहो मन से कहो, स्वामी कहो, शंकर कहो ।।12।।

स्वामी-अनामी

(दिनांक १७.१०.६४ की यह कविता लिखी गई थी)

हे! स्वामी तुम हो अनामी, प्रभु तुम अन्तरयामी।
स्वामी तुम तो शिव शंकर हो, यह बात जग ने जानी।।
हे स्वामी .....
कब से पुकारूं स्वामी तुमको, तुमने लगाई कितनी देरी।
मैं हूँ नेत्र का दुखिया स्वामी, मुझे नेत्र दृष्टि दे दीजे।
अपनी कृपा–दृष्टि से स्वामी, सेवक के पाप हर लीजे।
मैं हूँ सेवक तक चरणों का, मुंह अबोध जान क्षमा कीजे ।।2।।
हे स्वामी .....
तेरे बिना मेरा नहीं कोई, मैं तुम्हें छोड़ किसको ध्याऊँ।
"रतन" विनय करें स्वामी जी से, मैं नेत्र, दृष्टि वापिस पाऊँ।।
हे स्वामी .....

(परम भक्त श्री ठाकुर साहब के यह भक्ति गीत लिखने के एक सप्ताह बाद उन्हें नेत्र ज्योति प्राप्त हुई-प्रकाशक)

श्री अनंत श्री स्वामी जी

ऐसे स्वामी · पाकर जिसने, गुरु–कृपा का लाभ न पाया।
व्यर्थ रहा नर–जीवन उसका, जिसने गुरु उपदेश न पाया ।।1।।
ऐसे स्वामी .....
सन्यासी–भेष में शिवशंकर, इस वसुन्धरा पर अवतरित हुए।
शाक्त–धर्म अरु राष्ट्र–रक्षा हित, दतिया नगरी में आ पहुंचे ।।2।।
ऐसे स्वामी .....
शाक्त–धर्म हित ग्रन्थ रचे बहु, प्रभु राष्ट्र गुरु का पद पाये।
"रतन" कहें मेरे गुरु धन्य हैं स्वामी जन–जन के मन को भाये ।।3।।
ऐसे स्वामी .....

श्री स्वामी

स्वामी, स्वामी रटते–रटते, मुंह हो गई बहुत अवरिया।
स्वामी जी मुझे राह बता दो, मैं भटक गया हूँ डगरिया ।।1।।
स्वामी–स्वामी.....
हे! स्वामी इतना वर दे दो, सदा रहूँ चरणों का चेरा।
श्री जगजननी माँ पीताम्बरा, अरु स्व–गुरु के ही गुण गाऊँ ।।2।।
स्वामी–स्वामी.....
प्रेम रहे सदा तब श्री चरणों में, जीवन भर तेरे गुण गाऊँ ।।3।।
स्वामी–स्वामी.....

गुरु दर्शन

मैं नित उठ गुरु दर्शन करता, फिर भी मेरा मन भरा नहीं।
तन–मन से गुरु सेवा करता, फिर भी मेरा मन भरा नहीं ।।1।।
गुरु दर्शन को मेरी अंखियां, प्रतिदिन ललचाती रहती हैं।
ज्यों चकोर चन्द्र अवलोकन को, प्रतिदिन ललचाया करती हैं ।।2।।
मैं नित उठ गुरु दर्शन करता, पर दर्शन से मन भरा नहीं।
गुरु दर्शन से शिक्षा मिलती, श्री गुरु आज्ञा नित शीश धरो ।।3।।
गुरु से मुझको बहु ज्ञान मिलां, फिर भी मेरा मन भरा नहीं।
गुरु देव दया कर वर दीजे, मेरी गुरु भक्ति बढ़ा दीजे ।।4।।
गुरु दर्शन स्पर्शन करने से, भव पाप ताप हर जाते हैं।
"रतन" विनयश्री स्वामी जी से, गुरु–भक्ति से मन भरा नहीं ।।5।।

श्री गुरु आशीष

गुरु आशीष से शिष्य का होता है कल्याण,
भवसागर की आपदाओं से मिलता त्राण।
गुरु आशिष के लिए करते रहो प्रयास,
गुरु कृपा होगी अवस कभी न होना निराश ।।1।।

निर्मल मन से कीजिये गुरु सेवा सहर्ष,
त्याग, कपट, छल, छिद्र सब, होता तब उत्कर्ष।
गुरु कृपा सबसे प्रबल, मन रख ऐसी आस,
सेवा का फल मधुर है कर मन में विश्वास ।।2।।

गुरु आशिष से राम ने शिव–धनु तोड़ा जाय,
जनक पुरी पहुंचे प्रभु रचा जानकी ब्याह।
गुरु आशिष से होते हैं सब काम,
अन्त समय उस भक्त को मिलता पूर्ण विराम ।।3।।

गुरु आशिष को मानिये सबसे श्रेष्ठ महान,
जब गुरु मन से प्रसन्न हों, देते अपना ज्ञान।
"रतन" जतन कर स्वगुरु के कीजै निज दर्शन,
गुरु आशिष देंगे अवस शिष्य करे समर्पण ।।4।।

गुरु आशिष मिलती जिसे, वो है शिष्य महान,
अन्त समय उस शिष्य को मिलते हैं भगवान
गुरु श्रेष्ठ है इष्ट से गुरु से मिलता इष्ट,
शक्ति पात कर दे गुरु, तो हो जावे कल्याण ।।5।।

'श्री पीताम्बरा माँ'

स्वर्ण–आसन आसीन भगवती।
धारण किए पीत परिधान।।
तीन नेत्र करुणामय पूरित।
मुनिवर सादर करे प्रणाम ।।1।।

एक हस्त में गदा को धारें।
दूजे हस्त में पाश विशाल।।
तीजे हस्त जिह्वा गहैं माता।
चतुष हस्त में मुद्गर विशाल ।।2।।

जो जन करते ध्यान माता का।
उनका जीवन रहे निहाल।।
'ह्लीं बीज हृदय में धारें।
वे जन रहते हैं खुशहाल ।।3।।

बगुला मुखी है नाम मात का।
जो दुष्टों पर रखती तीव्र नजर।
प्रति–दिन भक्तों की रक्षा हित।
रहती निस–दिन मात सजग ।।4।।

गुरु–कृपा से भक्तों का झट।
पीताम्बरा करती कल्याण।।
आवागमन का चक्र जीव का।
कटता है कहैं वेद–पुराण ।।5।।

दुष्ट–दमन कर देवी माता।
दे देतीं निर्भय वरदान।।
"रतन" विनय माँ पीताम्बरा से।
सेवक का भी रखियो ध्यान ।।6।।

शक्ति-पात

शक्ति पात सद्गुरु करत।
जब गुरु होत प्रसन्न।।
योग्य शिष्य पा सद्गुरु।
शक्ति देत अवि छिन्न ।।1।।

गुरु आशीष मिले जिसे।
शिष्य वही मति मान।।
शक्तिपात होता जिसे।
ता सम धन्य न आन ।।2।।

धन्य भाग्य ऐसे शिष्य के।
जिसे गुरु–शक्ति मिले अविछिन्न।।
"रतन" कहें गुरु–भक्त से।
श्री सद्गुरु ब्रह्म अभिन्न ।।3।।

श्री गुरु-पूजा का महत्व

गुरु पूजा से भक्त का, हो जाता है विकास।
गुरु भक्ति से भक्त को, मिलता ज्ञान–प्रकाश ।।1।।
गुरु भक्ति से भक्त को मिलते सन्त अनेक।
सत् संगत कर साधु से, होता–इष्ट–विवेक ।।2।।
परब्रह्म गुरु जानिये, गुरु मिलावें देव।
गुरु श्रेष्ठ हैं इष्ट से, गुरु से भिन्न न देव ।।3।।
गुरु–पूजा से भक्त के, भव–पाप होय सब क्षार।
"रतन" कहें गुरु भक्त से, होगा भव–सिन्धु पार ।।4।।

गुरुदेव से बढ़कर कोई नहीं

गुरुदेव से बढ़कर कोई नहीं,
गुरुदेव से बढ़कर देव नहीं।
गुरु से ही सबको ज्ञान मिले,
गुरु से अध्यात्मिक ज्ञान मिले ।।1।।

गुरु से सत–संग समाज मिले,
गुरु से ही ब्रह्म का ज्ञान मिले,
गुरु से ही ज्ञान–विज्ञान मिले,
गुरु से ही सब साधन–धाम मिले ।।2।।

गुरु से ही मान सम्मान मिले,
परलोक–लोक में मान मिले।
गुरु से गूढ़ार्थ गुरु तत्व मिले,
अजर अमर अमृत्व मिले ।।3।।

गुरुसेवा से सदभक्ति मिले,
गुरु चरण कृपा से मुक्ति मिले?
गुरु सम महारथी कहाँ मिले,
गुरु जैसा सारथी कहाँ मिले? ।।4।।

सद्गुरु सा समदर्शी कहां मिले,
गुरु सा मार्गदर्शक कहां मिले?
बस "रतन" विनय श्री चरणों में,
श्री गुरु–चरणों में स्थान मिले ।।5।।

मेरे तो स्वामी कृपालु

मेरे तो स्वामी कृपालु, दूसरा नहिं कोई।
माथे जांके अर्द्ध चन्द्र, मेरा गुरु है सोई ।।1।।
मेरे तो .....

स्वामी अनाम शंकर हैं, मेरे गुरु सोई।
श्रद्धा–जल सींच–सींच भक्ति–बीज बोई ।।2।।
मेरे तो .....

अब तो बीज फैल गया, गुरु निष्ठा बेल होई।
"गुरु कृपा" फल प्राप्त हुआ, मेरा जीवन सफल होई ।।3।।
मेरे तो .....

स्वामी ढिंग बैठ–बैठ, अज्ञान–तिमिर खोई।
"रतन" गुरु शरण पड़े, अब निश्चित मुक्ति होई ।।4।।
मेरे तो .....

भारतीयता

ये "रतन" ऐ रतन ? सुन लो देकर मन, तुझे पुकारे तेरा वतन।
शश्य श्यामला धरती न्यारी, ऐसा सुन्दर है अपना वतन ।।1।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

भारत माता अरु पीताम्बरा, सेव्य सदा है तुझको "रतन"।
शक्ति अर्जन को माँ पीताम्बा, जग–जननी से करो नम्र नमन ।।2।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

पीताम्बा की कृपा दृष्टि हो, तब होगा प्रण पूरा तेरा।
यह कर्तव्य निभाना है तो, गुरु कृपा से होगा पूरा ।।3।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

भारत माँ की रक्षा करने हित, तुम अर्पण कर दो अपना तन।
गुरु उपकारों का जीवन भर, तू कर ले गुणगान घनेरा ।।4।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

जीवनभर सद्गुरु के गुण गा ले, फिर न रहेगा ये तेरा तन।
भारत माँ को शीश नवाले, जिसने पाला है तेरा तन ।।5।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

"रतन" कहे सुन मन अज्ञानी, है भारत वीरों की कहानी।
भारत माता है सब की प्रिय माता,
तू! अर्पण कर अपना तन–मन–धन ।।6।।

ऐ रतन, ऐ रतन ?.....

गुरु-महिमा

गुरु बिन ज्ञान नहीं मिलता है।
गुरु बिन मान नहीं मिलता है।।
गुरु बिन ध्यान नहीं लगता है।
गुरु बिन ब्रह्म नहीं मिलता है ।।1।।
गुरु बिन मार्ग नहीं मिलता है।
गुरु बिन इष्ट नहीं मिलता है।।
गुरु बिन अज्ञान नहीं हटता है।
गुरु बिन मोह नहीं मिटता है ।।2।।
गुरु बिन साधु नहीं मिलता है।
गुरु बिन ज्ञान भण्डार नहीं मिलता है।।
गुरु बिन साधु–समाज नहीं मिलता है।
गुरु बिन ध्यान–कपाट नहीं खुलता है ।।3।।
गुरु बिन जड़ चेतन ग्रन्थि नहीं छुटता है।
गुरु बिन सत–संग नहीं मिलता है।।
"पीताम्बा" विश्वास अटल है।
गुरु बिन स्वर्ग नहीं मिलता है ।।4।।

जीवन साथी

हे! पारथ के सारथी, तुमको करूं प्रणाम।
मेरे जीवन को तुम्हीं, रखियों कर में थाम ।।1।।
रखियो कर में थाम, तुम्ही सबके रखवाले।
भव–सिंधु बीच है, नाव तुम्हीं हो खेवनहारे ।।2।।
भव–सागर के मध्य, भंवर में जीवन मेरा।
काम, क्रोध, मद मोह, लोभ, मत्सर का प्रेरा ।।3।।
हे! मीरा के प्रियतम, तुमको सहस्त्र प्रणाम।
मेरी लज्जा राखियो, अपने कर में थाम ।।4।।
अपने कर में थाम, अंक भर गोद विठालो ।
काम, क्रोध, मद मोह, लोभ, मत्सर से उबारो ।।5।।
माया–चक्र महान, जगत का झूठा नाता।
आवागमन का फंद, छुड़ालो हे! जगत्राता ।।6।।

सदाचार!

जल बीच बेतवा नौका है, न जामें नैकऊ शंका है।
इतपार करत हैं मल्लाह चार, उत पार करेंगे सदाचार ।।1।।
जासौ मन् हो जा सावधान, का पतौ कबै है कढ़त प्राण।
मन राख ओरछा–राम लला, वो पार करत हैं सबै भला ।।2।।
ज्यों पार हुआ तू इस नद से, त्यौं पार करेगा भव–सिंधु से।
ऐसा विश्वास "रतन" का है फिर अपने–अपने मन का है ।।3।।

भव सागर

सिन्धु के मझार धार, नाव पड़ी मेरी है।
पार करो शीघ्र अम्ब! काहि करी देरी है।।
सिन्धु जल अपार, वारि को प्रवाह वेग।
भाद्र–मास वर्षा प्रगाढ़, जल है श्याम मेघ ।।1।।
भव सागर के बीच, नाव जीवन की मेरी है।
पार करो तुम्ही अम्ब, अब न करो देरी है।।
भव–सिन्धु है अपार, माया का न पारावार।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर छैः विकार ।।2।।
जीवन की नाव फंसी, सिन्धु बीच मेरी है।
कर में पतवार कृपा, लेहु मात मेरी है।।
अपनी कृपा की कृपाकोर करो।।
दुशासन कामरूप, खींच रहो चीर अम्ब।
संसार मध्य नग्न होय, तेरो सुत निष्कलंक ।।3।।
एक कर कृपाण लेहु, दूजे कर खप्पर गहि।
कामरूप दुशासन, दुष्ट दमन होवे तब।।
ज्यों शंकर सकोप हुए, तीजा नेत्र खोल दिया।
कामदेव भस्म किया, अपना तप पूर्ण किया ।।4।।
मैं हूँ अनाथ मात, तेरो ही भरोसा मुंह।
तुझे छोड़ कहाँ जाऊँ, तेरो ही सहारा मुंह।।
मेरी लाज रखो मात! टेरों हौं दे पुकार।
तू ही आधार मात, "रतन" पुत्र तेरो है ।।5।।

-क्षमादान-

हे! गुरुदेव क्षमा कर दीजै,
भूल–चूक पर ध्यान न दीजे।
भक्ति न जानूं प्रेम न जानूं,
मेरे श्रद्धा–सुमन ग्रहण कीजे।।
हे! गुरुदेव ..... ।।1।।

कविता का लिखना नहिं जानूं,
शब्दों का भण्डार नहीं है।
भाषा का भी ज्ञान नहीं है,
छन्द–अलंकृत शब्द नहीं है।।
हे! गुरुदेव ..... ।।2।।

बस! गुरुदेव के ही गुण गाऊँ,
प्रेम–भक्ति से उन्हें रिझाऊँ।
स्वामी के उपकार सुनाऊँ,
गुरु–कृपा को मैं ललचाऊँ।।
हे! गुरुदेव ..... ।।3।।

गुरु–पिता–माता''पीताम्बा',
और देवता चित्त नहीं लाऊँ।
प्रेम रहे सदा गुरु–भक्ति में,
श्री चरणों का आशिश पाऊँ।।
हे! गुरुदेव ..... ।।4।।

तन–मन–धन सब अर्पण तुझको,
मेरा कुछ नहिं तेरा ही तुझको।
''रतन'' कहें सच बात यही हे,
गुरु क्षमा की आस है मुझको।।
हे! गुरुदेव ..... ।।5।।

ॐ

श्री पीताम्बरा पीठ
ह्रीं
दतिया (म.प्र.)